प्रश्न ८—गीतिकाव्य के विभिन्न भेदों का सामान्य वर्णन करते हुए लोकगीत तथा साहित्यिक गीति का अन्तर स्पष्ट कीजिए। साथ ही मुक्तक काव्य और गीति के अन्तर का भी उल्लेख कीजिए।

गीतिकाव्य के भेद—गीतिकाव्य के विभाजन के अनेक आधार हैं—जैसे, भाषा, देश, वर्ण्य विषय और विधान आदि। हम यहाँ वर्ण्य-विषय के आधार पर गीतिकाव्य के रूप-भेदों का नामोल्लेख इस प्रकार कर सकते हैं—वीर गीत, शोक गीत, चतुर्दशपदी, व्यंग्य गीत, रूपक गीत, राष्ट्रीय गीत, उपालम्भ गीत, विचारात्मक गीत, आदि।

वीर गीत (Ballads)—किसी वीर व्यक्ति के चरित्र को आधार बनाकर लिखा गया गीत 'वीर गीत कहलाता है। इस प्रकार के गीतों में प्रायः कथा और संगीतात्मकता का मिश्रण होता है। इस प्रकार के गीतों की भाषा प्रसाद और ओज गुण सम्पन्न होती है। किन्तु इन्हें कुछ आलोचक गीतिकाव्य में स्वीकार नहीं करते क्योंकि इनमें प्रबन्धात्मकता होती है। फिर भी राष्ट्रीय भावना को लेकर लिखे गये

Scanned with CamScanner

अनेक गीत इस कोटि में सहज आ जाते हैं, उन्हें हम 'राष्ट्रीय गीत' या 'वीर गीत' कह सकते हैं।

करुण गीत (Elegy)—ग्रीक में विशेष प्रकार के छंद विधान को ही 'इलेजी' कहा जाता है। अतः 'इलेजी' छन्द में निर्मित गीत ही 'एलेजी' कहा जाने लगा है। इन गीतों में करुणा का आधान्य होता है जहाँ अपने प्रिय का निधन या उसके अनिष्ट की कल्पना होती है। प्रसाद का 'आँसू', निराला की 'सरोजस्मृति' आदि इसके उदाहरण हैं।

सम्बोध गीत (Ode)—गीत में किसी वस्तु या प्राणी को सम्बोधित कर अपनी भावाभिव्यक्ति की जाती है। जैसे पंत की 'छाया', 'भावी पत्नी के प्रति, निराला की 'यमुना के प्रति'।

चतुर्दशपदी (Sonnet)—यह गीत चौदह पंक्तियों का होता है। इसमें प्रेम, विरह आदि कोमल भावनाओं के आधार पर गीत लिखे जाते हैं। हिन्दी के इन गीतों को विशेष महत्त्व नहीं मिला है। हाँ प्रभाकर माचवे ने 'गांधी के प्रति' आदि चतुर्दशपदियाँ अवश्य लिखी हैं।

व्यंग्य गीत (Satire)—'व्यंग्य गीत' उन गीतों का नाम है जिनमें किसी वस्तु, स्थान, प्राणी या तथ्य पर व्यंग्य या कटाक्ष किया जाता है। आधुनिक काल में भारतेन्दु, निराला तथा प्रगतिवादी कवियों ने काफी व्यंग्य गीत लिखे हैं। निराला की 'कुकुरमुत्ता' तथा 'मालपूये' आदि ऐसी ही कविताएँ हैं।

उपालम्भ गीत—व्यंग्यपूर्ण उपालम्भों से युक्त कविता उपालम्भ गीत के अन्तर्गत आती है। सूर के पद इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

रूपक गीत—जिन गीतों में रूपकों या अन्योक्तियों से अप्रस्तुत के द्वारा अर्थ व्यंजित होता है, उन्हें 'रूपक गीत' कहते हैं। छायावादी कवियों ने ऐसे अनेक गीत लिखे जाते हैं।

लोक गीत एवं साहित्यिक गीत—'लोकगीत' भी गीतों के अन्तर्गत आते हैं। इनमें जन-जीवन के दर्शन होते हैं। किन्तु साहित्यिक गीत और लोक गीतों में अन्तर होता है—

(१) "लोक गीतों में निजीपन होता है किन्तु उनमें साधारणीकरण और सामान्यता कुछ अधिक रहती है। इसी के द्वारा वैयक्तिक रस की अपेक्षा जन रस उत्पन्न होता है। साहित्यिक गीतों में निर्माता का निजीपन रहता है। (२) लोक गीतों का सम्बन्ध प्रायः अवसर विशेष होली, विवाह जन्मोत्सव आदि में रहता है किन्तु साहित्यिक गीत सदैव गाये जाते हैं। (३) लोक गीतों के निर्माता प्रायः अपना नाम अव्यक्त रखते हैं और कुछ में व्यक्त भी रहता है किन्तु साहित्यिक गीतों में प्रायः अपना नाम अव्यक्त ही रहता है।"

लोक गीतों और साहित्यिक गीतों में साम्य भी पर्याप्त होता है—(१) 'लोक गीतों में भी साहित्यिक गीतों की सी कल्पना रहती है। (२) लोक गीत भी जातीय साहित्य से सामग्री ग्रहण करते रहते हैं। रामायण-महाभारत से सम्बन्धित अनेक

Scanned with CamScanner

लोकगीत हैं। (२) लोक-साहित्य और शिक्षित लोगों के साहित्य में आदान-प्रदान होता रहता है। जायसी के पद्मावत की कथा का पूर्वार्द्ध लोक-साहित्य से ही निर्मित है।" बाबू गुलाबराय ने लिखा है कि "साहित्यिक गीतों का उदयालोक गीतों से हुआ है। मेरी समझ में तो महाकाव्य भी लोक गीतों के विकसित और संगठित रूप हैं।"

गीतिकाव्य एवं मुक्तककाव्य—गीतिकाव्य मुक्तककाव्य से भी भिन्न है। इन दोनों का सामान्य अन्तर इस प्रकार देखा जा सकता है—"एक मुक्तक विषय-प्रधान है। दूसरा गीति विषयी-प्रधान। एक में कवि पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति करता है तो दूसरे में कवि स्वयं पात्र बन बैठता है। एक वस्तुपरक है तो दूसरा भावपरक। एक परिस्थिति विशेष का चित्रण करता है तो दूसरा भाव विशेष का। एक का कवि तटस्थ दर्शक है तो दूसरे का स्वयं भोक्ता।" मुक्तक काव्य की शैली अपेक्षाकृत स्थिर, परिमार्जित, कृत्रिम तथा असहज होती है। जबकि प्रगति की अपेक्षाकृत तरल, स्वाभाविक, सहज, और अकृत्रिम होती है।